ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

बारां जिले के प्रमुख दूर्ग एवं उनका पर्यटन महत्व

Major Doors of Baran District and their tourism importance

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

अनिल मर्मिट
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान के दक्षिण पूर्वी क्षेत्र के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से प्रमुख वराह नगरी बारां जिला अपने आप में अमिट छाप रखता है। बारां जिले के हर गांव, ढाणी ओर कस्बा पर्यटन दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पुरातात्विक ओर पर्यटन दृष्टि से देखे तो यहा विभिन्न कालो में निर्मित किले मन्दिर मज्जिद छतरिया जगह जगह विधमान् है।

Historically, culturally and religiously, Varah Naga Baran district of Rajasthan's South Eastern region has an indelible mark in itself. Every village, dhani and town in Baran district is important from tourism point of view. If you look at the archaeological and tourism point of view, here the fort temple built in different times is present in the place of Mjid Chhatariya.

मुख्य शब्द : वराह नगरी, कोषवर्घन, शेरगढ़, शाहबाद, गुगोर की छतरिया, भण्डदेवरा, नाहरगढ़, केलवाड़ा, परवन नदी, पार्वती नदी, शेरशाह सूरी, इत्यादी।

Varah Nagri, Koshavargan, Shergarh, Shahabad, Gugore's Chhatariya, Bhandadevara, Nahargarh, Kelwara, Parvan River, Parvati River, Sher Shah Suri, etc.

प्रस्तावना

राजस्थान राज्य अपनम आप में एक वैभवशाली और समृद्वशाली संस्कृति का प्रयाय रहा है। यहॉ कि प्रत्येक पर्व त्यौहार नृत्य, रिति रिवाज आचार–विचार में राजस्थानी संस्कृति की आत्मा झलकती है। तीज त्यौहार ,उमंग के साथ–साथ विश्वास के प्रतीक है। होली पर्व पर नृत्य करती आकर्षित युक्त महिलाये अपने आप में रोमांचित कर देती है। बांरा जिले में वर्षभर पर्व त्यौहार आते रहते है। वराहनगरी बांरा के लिए सात वार नौ त्यौहार कहावत प्रचलित है।

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में राजस्थान के दुर्गो का भी महत्पूर्ण स्थान है राजस्थान के ख्यातमान दुर्गो में शाहबाद, नाहरगढ, शेरगढ, गुगोर और विलास में रोमांचक कथाएं जुडी है जो भारतीय इतिहास की अनमोल धरोहर है। राजस्थान के जनमानस को यह दुर्ग और उनसे जुड़े आख्यान सदा से ही प्रेरणा देते आये और वीरता और शौर्य के प्रतीक यह गढ़ और किले अपने अनूठे स्थापत्य विशिष्ट संरचना अद्भुद् शिल्प सौन्दर्य के कारण दर्शनीय है। गीतों में जहां एक और लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रतिष्ठा मिली वहीं व्यक्ति स्वतन्त्रता का स्वर फूटा और लोक पटल सांस्कृतिक चेतना उजागर हुई है। इस चेतना का परिणाम हमें राजस्थान के मेलों और त्यौहारों में दिखाई देता है। यहॉ मेलो और त्यौहारो के आयोजन में संपूर्ण लोकजीवन पूरी पुरी संक्रियता के साथ शामिल होकर अपने भावनात्मक एकता का परिचय देता है।

नाहरगढ किले का निर्माण सन 1526 ई. में ढांव के खीची राजा के पुत्र नाहरसिंह ने करवाया औरंगजेब ने आक्रमण कर नाहरसिंह का धर्म परिवर्तन कर उसका नाम नेकखाव रख दिया था। शिवाजी ने इसका विरोध किया और यहां आक्रमण किया। इस स्थान पर आज भी नेक बाबा की मजार स्थित है। बाहर से इस किले की बनावट दिल्ली के लाल किले से मिलती है। महलों की सुरक्षा के लिये कुछ भी नहीं किया जा रहा है। लोगों ने कहा कि यदि इस किले को सुरक्षा प्रदान करके तथा अन्दर राजसी वैभव वाला होटल बनाया जावे तो यहां पर्यटकों का प्रमुख केन्द्र हो जायेगा।

शाहबाद का किला अपने अनूठे स्थापत्य और विशिष्ट संरचना के कारण भी अपनी विशेष पहचान रखता है। दुर्ग की सबसे बड़ी विशेषता है इसकी नैसर्गिक सुरक्षा व्यवस्था अपनी बनावट की इस अद्भूत् विशेषता के कारण शत्रु के लिए दूर से किले की स्थिति के विषय में अनुमान लगाना कठिन रहा होगा। किले को प्रवेश पर पहुंचकर ही देखा जा सकता है। क्योंकि यह किला उच्च पर्वत शिखर पर घने जंगल में स्थित है। किले के प्रवेश द्वार तक पहुंचते ही हिन्दु–मुस्लिम स्थापत्य कला से साक्षात्कार होता है।

विलासगढ़ का पूर्व नाम कृष्णविलास रहा है। विलासगढ़ बारां से शाहबाद रोड़ पर भंवरगढ़ से रामपुरा गांव से पॉच किलोमीटर दुर है। बांरा जिला मुख्यालय से संडक मार्ग से जुड़ा हुआ है। विलासगढ़ के आस पास तीन किलोमीटर परिक्षेत्र में आज भी प्राचीन मंदिरो की श्रृखला मोजूद है। विलास नदी के बांयी और विलासगढ़ स्थित होने के कारण इसका नाम विलासगढ हो गया। विलास नदी पर धार्मिक स्थल के रूप में कन्या दह स्थित है। जहा आज भी कार्तिक पूर्णिमा पर अनेक महिला–पुरूष स्नान करके धार्मिक लाभ लेते है।

बारां से करीब 45 किलोमीटर दूर शेरगढ़ एक प्राचीन स्थल है जिसका पूर्व नाम कोषवर्धन था। बरखेड़ी दरवाजे के बांयी ओर सीढ़ियों के नीचे एक लाख शुद्ध संस्कृत में लेख है जिसमें देवदत्त नामक बौद्धमतानुयायी नागवंषी राजा द्वारा एक विहार बनवाने का उल्लेख है तिथि माघ सुदी 6, संवत् 847 वि. (790ई.) है। शेरगढ़ में लक्ष्मीनारायण के मंदिर पर विक्रम की 11वीं शताब्दी के दो षिलालेख हैं, जिनमें एक में धार के परमार राजाओं की वागपतिदेव से महाराज उदयादित्य देव तक की वंषावली दी हुई है। इतिहासकारों का मानना है कि 16वीं शतीं के मध्य में शेरषाह सूरी ने इसे जीता और अपने नाम पर शेरगढ़ नाम दिया।

बारां जिले के दुर्गो के निरन्तर उपेक्षित होने के कारण बारां जिले की विशाल सांस्कृतिक सम्पदा की उपेक्षा होना आज अत्यधिक चिंता का विषय बना हुआ है। इसमे से कई दुर्ग जीर्ण–शीर्ण हो गये है। तथा अन्य होते जा रहें है। यदि समय रहते इन सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति सचेत नही हुए तो एक दिन इस अनमोल सांस्कृतिक सम्पदा से हम लोग हाथ धो बैठेगें।

समस्याएं – बारां जिले के प्रमुख दुर्गो तक पहूंचने के लिए न तो परिवहन की सुविधा है और न ही परिवहन मार्ग सही अवस्था में है। बारां में मूगोर का किला, सारथलगढ़, मूंगोर, विलास, रामगढ़ आदि स्थानों पर उचित परिवहन, आवास एवं ठहरने की उचित व्यवस्था का अभाव है। आधुनिक संचार व विद्युत व्यवस्था का अभाव है। हेरिटेज होटल, किले व महलों आदि में विद्युत आपूर्ति की समूचित व्यवस्था नहीं है।

बारां के भण्डदेवरा, काडोनी, मूगोर का किला, छाबड़ा का किला, विलास आदि प्रमुख पर्यटन स्थलों पर विद्युत व्यवस्था का अभाव है। रात में वहां ठहरना अत्यन्त कठिन है। नई ट्रेवल एजेन्सियां पर्यटकों को भ्रमित करती है। भाषागत समस्या एवं अप्रषिक्षित व अपर्याप्त गाइड़ तथा पर्यटन स्थलों पर ''लपकों'' की समस्या प्रमुख है। पर्यटक अधूरे ज्ञान वाले गाइड़ो द्वारा ठगी का षिकार हो जाते है। बारां के प्रमुख दुर्गो एवं पर्यटन–स्थलों पर गाईड़ बहुत कम है। इसकी उपलब्धता भी पर्यटन विभाग के सहयोग पर निर्भर करती है।

ऐतिहासिक दुर्गो के रख रखाव एवं पर्यटन के समुचित विकास में सबसे बडी बाधा उचित पर्यटन नीति का अभाव है ऐसा माना जाता है कि पर्यटन नीति उच्च वर्गीय पूंजीपतियों के हितों को ध्यान मे रखकर बनाई जाती है। जबकि पर्यटन नीति ऐसी बनाई जाने के निर्देश हो जो निवेषकर्ता को बाधा मुक्त रखे और पर्यटन के विकास की गति की निरन्तरता बनाये रखे। तथा आवष्यक रूप से पर्यटन नीति स्वस्थ और उचित वातावरण तैयार करने वाली हो।

ऐतिहासिक दुर्गो के रख रखाव एवं पर्यटन के समुचित विकास में सबसे बडी बाधा उचित पर्यटन नीति का अभाव है ऐसा माना जाता है कि पर्यटन नीति उच्च वर्गीय पूंजीपतियों के हितों को ध्यान मे रखकर बनाई जाती है। जबकि पर्यटन नीति ऐसी बनाई जाने के निर्देष हो जो निवेश कर्ता को बाधा मुक्त रखे और पर्यटन के विकास की गति की निरन्तरता बनाये रखे। तथा आवष्यक रूप से पर्यटन नीति स्वस्थ और उचित वातावरण तैयार करने वाली हो।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का ऐतिहासिक महत्व के साथ – साथ सांस्कृतिक , पर्यटन एवं धार्मिक उद्देश्य भी है। लेख के माध्यम से लोग बारॉ के किले एवं किलो से सम्बन्धित पुरातात्विक महत्व की चीजों का देखकर अवलोकन कर सकेगें । जिससे बारॉ जिले में पर्यटन का उद्देश्य पूर्ण होगा।

निष्कर्ष

किसी भी पर्यटन स्थल पर अन्तसंरचना अथवा भौतिक सुविधाओं का विस्तार करके आने वाले पर्यटकों की संख्या को बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए विद्यमान आधारभूत संरचना के आधार पर शीघ्र विकसित किये जाने वाली पर्यटन सुविधाओं के क्षेत्र को प्राथमिकता दी जाये। पर्यटक स्थल पर जो सुविधाऍ उपलब्ध है उन्ही के विस्तार की व्यवहारिक योजना बनाई जानी चाहिए।

सुझाव

राजस्थान के किलों के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने तथा समग्र विकास व सुरक्षा की आवश्यकता को दृष्टिगत रखकर राज्य सरकार द्वारा इन्हे यूनेस्कों की विश्वविरासत में शामिल कराने हेतु प्रयास किये गये। बारां जिले के ये दुर्ग ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक व आर्थिक महत्व के है क्योंकि इन दुर्गो से हमें उस समय की सामाजिक व सांस्कृतिक तथा आर्थिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है उस समय की शासन व्यवस्था व सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी देते ये दुर्ग अपना प्राचीन वैभव खोते जा रहे है जिन का संरक्षण हमें करना चाहिये ताकि ये प्राचीन विरासत हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी दिखा सके।

अतः प्रशासन को यदि पर्यटन विकसित करना है तो इन दुर्गो की अधिक से अधिक जानकारी प्रिंट

मिडिया व नेट के जरिये निकालनी चाहियें। इसके लिये सबसे सशक्त माध्यम है अखबार। अखबार के माध्यम इन दुर्गो की जानकारी आम जनता को भी होगी जानकारी के अभाव में इन दुर्गो का महत्व कम होता जा रहा है अतः हमें इन दुर्गो का महत्व तथा इनके खोते जा रहे अस्तित्व को बचाने का प्रयास करना चाहिये ताकि इतिहास के मूक गवाह इन दुर्गो को संरक्षित किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मिश्र, रतनलाल (2008) ''राजस्थान के दुर्ग'' साहित्यागार, जयपुर,*
2. *भास्कर, अरविन्द सिंह/शर्मा महेश कुमार (2013) ''राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग'' नाथ पब्लिकेशन्स, सीकर*
3. *भारद्वाज, शान्ति/जैन, भगवतीलाल (1989) ''हाड़ौती का पुरातत्व'' हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान, कोटा*
4. *मनोहर, राघवेन्द्र सिंह (2018) ''राजस्थान के प्रमुख दुर्ग'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर*
5. *प्रहलाद दुबे (2012) ''बारां दर्पण'' जिला पुलिस खेलकूद कल्याण समिति जिला बारां (राज.)*
6. *शर्मा, निर्मला (2002) ''कोटा व बारां जिलों में पर्यटन विकास का मूल्यांकन एक भौगोलिक अध्ययन'' महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।*
7. *भास्कर, अरविन्द /शर्मा, महेश (2013) ''राजस्थान के प्रसिद्ध दूर्ग'' नाथ पब्लिकेशन, सीकर*
8. *मनोहर, राघवेन्द्र सिंह (2018) ''राजस्थान के प्रमुख दूर्ग'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर*
9. *जगत् नारायण (2008) ''कोटा राज्य का इतिहास''भाग–1, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर*